17 अप्रैल 2021, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक

Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक समयसार पर

वर्ष : 44, अंक : 2
अप्रैल (द्वितीय), 2021 (वीर नि.संवत्-2547)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में पंचतीर्थ जिनालय का -

नवम् वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 26 फरवरी से 28 फरवरी तक नवम् वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 26 फरवरी को प्रात: डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार मण्डल विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा हुई, तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा 'समयसार' पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी ओसवाल परिवार 'पीतल फैक्ट्री' जयपुर द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। मंच उद्घाटन श्री ताराचंदजी सौगानी जयपुर ने किया। समारोह का उद्घाटन श्रीमती भारतीबेन-विजयभाई जैन दादर-मुम्बई द्वारा किया गया। सभी अतिथियों का सम्मान श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर थे। अतिथियों में श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता, श्री साकेतजी जैन सिंगापुर, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री शांतिलालजी गंगवाल सी.ए. जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे। आचार्य कुन्दकुन्द के चित्र अनावरणकर्ता श्रीमती कविता-प्रकाशचंदजी छाबड़ा सूरत, पण्डित टोडरमलजी के चित्र अनावरणकर्ता श्री चक्रेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमार (मुन्नाभाई) बजाज परिवार कोलकाता एवं गुरुदेवश्री के चित्र अनावरणकर्ता श्री कान्तिभाई मोटानी परिवार से श्री हितेनभाई मोटानी थे।

मंगलाचरण दिव्यांश जैन अलवर ने एवं मंच संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया।

महोत्सव के आमंत्रणकर्ता श्री श्रीमती भारतीबेन-विजयभाई जैन (हाथरसवाले) दादर-मुम्बई थे। श्री समयसार महामंडल विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती कुसुम-महेन्द्रकुमारजी गंगवाल जयपुर, श्रीमती कल्पना-नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर, श्री शान्तिलालजी चौधरी, भीलवाड़ा श्रीमती श्रीकान्ताबाई छाबड़ा जयपुर, श्री वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल, टोडरमल स्मारक जयपुर थे।

महोत्सव में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल**, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

श्री समयसार महामंडल विधान के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री, पण्डित रिमांशुजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये।

दिनांक 27 फरवरी को प्रात: परमागम ऑनर्स द्वारा 'सहजता का अन्तर्द्वन्द' पर संगोष्ठी संपन्न हुई। दिनांक 26 व 27 फरवरी की दोपहर को टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों एवं स्नातक विद्वानों द्वारा विशेष गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दिनांक 28 फरवरी को प्रात:काल **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** के प्रवचन के उपरांत सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया।

मस्तकाभिषेक के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका परिवार जयपुर, डॉ. एस.के. काला जयपुर, श्री शांतिलालजी गंगवाल (सी.ए.) जयपुर, श्री लक्ष्य छाबड़ा मोतीसन्स परिवार जयपुर, श्री मनोजजी बंघेला परिवार सागर, श्री प्रशांतजी मस्ताई परिवार, श्री शैलेन्द्रजी जैन, श्री संजयजी सेठी जयपुर, श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर, श्री हीराचंदजी बैद जयपुर आदि महानुभावों ने सर्वप्रथम मस्तकाभिषेक का लाभ प्राप्त किया।

महोत्सव का सीधा प्रसारण यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर किया गया, जिसके माध्यम से हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया। ●

(15) सम्पादकीय –

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

तृतीय अध्याय का सार (संसार दु:ख तथा मोक्षसुख का निरूपण)

अब दर्शन मोहनीय से होने वाला दु:ख बतलाते हैं। दर्शन मोहनीय के कारण इसको आकुलता बनी रहती है, क्योंकि जैसा पदार्थ है, वैसा यह मानता नहीं है तथा जैसा इसके श्रद्धान है, वैसा पदार्थ नहीं है। शरीर व आत्मा को एक मानकर ऐसा समझता है कि यही मैं हूँ और जो अवस्था शरीर की होती है, उसे अपनी अवस्था मानकर दु:खी होता है। इसे समझाने के लिये पण्डित टोडरमलजी ने एक पागल व्यक्ति का उदाहरण दिया है। जैसे – पागल को किसी ने कपड़े पहना दिये, वह उसे ही अपने अंग मानता है, उसे कभी फाड़ता है, कभी खोंसता है, कभी उतारता है, इसप्रकार व्यर्थ ही दु:खी होता है। जिसप्रकार वह वस्त्र तो पहिनाने वाले के आधीन है, उसीप्रकार ये जो शरीररूपी कपड़े मिले हैं, ये भी कर्म के उदय से मिले हैं, कर्म के आधीन है। ये शरीर कभी मोटा होता है, कभी पतला होता है, कभी नष्ट होता है, इससे यह जीव व्यर्थ ही दु:खी होता है। वास्तव में यह दु:ख इस मिथ्यात्व/दर्शनमोह के कारण है।

कभी कदाचित् संज्ञी पंचेन्द्रिय हो जाए, इसको सही बात सुनने का अवसर भी मिल जाए, तब तत्त्वनिर्णय करने का उपाय बने, लेकिन कभी-कभी अभाग्य ऐसा हावी हो जाता है कि कुदेव-कुगुरु-कुशास्त्र का निमित्त बने और वे इसके अतत्त्वश्रद्धान को पुष्ट कर देते हैं। खोटे गुरु मिल जाए, खोटे उपदेशदाता मिल जाए, तब इसकी बुद्धि काम नहीं करती कि सही-गलत क्या है। धर्म करना तो चाहता था, लेकिन क्या करे? उपदेशदाता के आधीन होकर मजबूर हो जाता है, खेदखिन्न होकर पीड़ित बना रहता है, कोई उपाय नहीं सूझता।

उपाय तो यह है कि सत्यश्रद्धान करे, अपने आपको देह से भिन्न जाने, शरीर से भिन्न आत्मतत्त्व को देखे, स्वयं के विपरीत श्रद्धान को मिटाये और यथार्थ श्रद्धान करे। पण्डित टोडरमलजी ने पेज नं. 52 पर यथार्थ श्रद्धान के लिये लिखा है कि 'अनादि-निधन वस्तुएं भिन्न-भिन्न अपनी मर्यादा सहित परिणमित होती है, कोई किसी के आधीन नहीं है, कोई किसी के परिणमन कराने से परिणमित नहीं होती है।' ये वस्तु स्वतंत्रता है, ये वस्तु स्वरूप है और तू जबरन उनको परिणमाना चाहे तो यह मिथ्यादर्शन है। हम जबरन पर वस्तुओं को परिणमाना चाहते हैं, बदलना चाहते हैं, फेरफार करना चाहते हैं, हस्तक्षेप करना चाहते हैं, ये हम पर दर्शन मोहनीय का तीव्र प्रभाव है; यही हमारे महादु:ख का कारण है।

इससे बचने का सच्चा उपाय तो यही है कि मिथ्यादर्शन से परपदार्थों को अन्यथा न जाने, अन्यथा परिणमित करना न चाहे, उन्हें यथार्थ स्वीकार करे, जो वस्तु जैसी है, उसे वैसा स्वीकार करे। **भ्रमजनित दु:ख का उपाय भ्रम दूर करना है।** भ्रम दूर करो, मैं देह नहीं मैं चेतन हूँ, मैं शरीर-मन-वाणी नहीं, मैं आत्मा हूँ, मैं इन्द्रियों का कर्ता नहीं, मैं इनसे भिन्न एक तत्त्व हूँ – यह विचार करो। इसतरह समझाते हुए सच्चा उपाय सम्यग्दर्शनादि को सिद्ध किया।

अब चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से होने वाले दु:ख और उससे निवृत्ति की बात बताते हैं – जब क्रोध का उदय आता है, तब गुस्सा करता है, मर्मच्छेदी वचन कहता है, गालियाँ बोलता है, हड़बड़ाता है, तकलीफ पाता है, अपने अंगों को पीटने लगता है, अंगों का घात करता है, दूसरे का बुरा करने लग जाता है, कहाँ तक कहें, आत्मघात कर लेता है, अंगों का घात करके, जहर खाकर मर जाता है। इतना अधिक क्रोध कि एक व्यक्ति जहर खाकर मर गया... इसतरह के वाक्य पण्डितजी ने पेज नं. 53 पर चारों कषायों के लिये दिये हैं।

ऐसे ही मान-माया-लोभ के बारे में लिखा कि मान से महंतता की इच्छा होती है, मायाचार से छल-कपट करने की इच्छा होती रहती है, लोभ से लाभ के अर्थ ना मालूम क्या-क्या उपाय सोचता है? काम तो होता नहीं है, दु:खी होता हुआ अंगों का घात करता है और जहर खाकर मर जाता है।

एक व्यक्ति जहर खाकर मर गया, पोस्टमॉर्टम की रिपोर्ट आयी कि जहर खाने से ही मरा है; परन्तु जिनवाणी यह कहती है कि जहर से नहीं मरा, अपितु क्रोध से मरा है, अभिमान से मरा है, मायाचार प्रकट होने के डर से मरा है। सत्य तो यही है कि आदमी जहर से नहीं मर रहा है, कषायों से मर रहा है। इसप्रकार इस प्रकरण में चारित्र मोह के उदयजन्य होने वाले दु:खों की बहुत सुन्दर चर्चा की।

इसीतरह से हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा,

तीनों वेद से होने वाले दु:ख बताये। जब भय का उदय होता है तो डर से मर जाता है। लक्ष्मण ने रामचंद्रजी की मृत्यु का समाचार सुना तो ऐसा शोक हुआ/झटका लगा कि मृत्यु हो गयी। देखो! कैसी हालत है इस जगत की...कभी डर से मर जाता है...कभी जुगुप्सा आदि से पीड़ित होता हुआ दिखायी देता है... विषय सहे नहीं जाते। यहाँ ऐसा विचार आता है कि इन अवस्थाओं में न प्रवर्ते अर्थात् गुस्सा न कर पाये...घमण्ड की पूर्ति न हो...इत्यादि अवस्थाओंरूप न प्रवर्ते तो क्रोधादिक पीड़ा उत्पन्न करते हैं और अवस्थाओं में प्रवर्ते तो मरणपर्यंत कष्ट होते हैं। वहाँ मरणपर्यंत कष्ट तो स्वीकार करता है; परन्तु क्रोधादिक की पीड़ा सहना स्वीकार नहीं करता। इससे यह निश्चित हुआ कि मरणादिक से भी कषायों की पीड़ा अधिक है, मृत्यु से भी ज्यादा पीड़ा कषायों की है।

भाईसाहब, आत्महत्या करके यह जीव चाहता है कि मैं सुखी हो जाऊँगा, लेकिन सुखी होने का उपाय आत्महत्या नहीं आत्म-आराधना है। आराधना करो...आराधना करो... विराधना से बचो। आत्महत्या कर लेने से ये जीव सुखी नहीं हो जायेगा। परभव में जाकर इसे शान्ति मिलने वाली नहीं है। तो पण्डितजी, आप ही बताओ कि सच्चा उपाय क्या है? पण्डितजी कहते हैं कि हम क्या बताएं, सच्चा उपाय भवितव्य होने पर बनता है, कार्य की सिद्धि, कषायों का शमन भवितव्य आधीन है, तेरी इच्छा के आधीन तो है नहीं; और इच्छाओं की पूर्ति कभी हो सकती नहीं। आत्मानुशासन में लिखा है -

आशागर्त: प्रतिप्राणी यस्मिन् विश्वमणूपमम्।
कस्य किं कियदायाति वृथा वो विषयैषिता।।

इस जीव का इच्छाओंरूपी गड्ढा इतना विशाल है कि सारे विश्व को उसमें डाल दिया जाये तो वह भी अणु के बराबर है। जीव तो अनंत हैं और विश्व एक ही है, किस-किसकी इच्छाओं की पूर्ति होगी, इसलिये इच्छाओं की पूर्ति करके सुख मानना यह बहुत बड़ी गलतफहमी है।

सच्चा उपाय तो यह है कि परपदार्थों में इष्ट-अनिष्ट बुद्धि मिटे, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो, भेदविज्ञान हो, तब कहीं जाकर इसका दु:ख मिटता है।

अब अन्तराय कर्म के उदय से होने वाले दु:खों की चर्चा करते हैं। अन्तराय कर्म के उदय से चाहा हुआ नहीं होता, इच्छा के अनुसार काम नहीं होते। जो काम करता है, उस काम में विघ्न/बाधाएं बहुत आती हैं, समस्याएं उत्पन्न होती हैं। काम तो अन्तराय कर्म के उदय से अटकते हैं और यह सोचता है कि इसने काम अटका दिया। ये सोचता है कि इसको मिटा दूँ...इसको हटा दूँ; इसप्रकार झूठे उपाय करता है, इससे कुछ होता तो है नहीं; सच्चा उपाय तो अपनी मान्यता को सुधारना ही है।

अब वेदनीय कर्म से होने वाले दु:खों की चर्चा करते हैं। वेदनीय कर्म से संयोग मिलते हैं, शरीर की अवस्थाएं होती है, असाताजन्य अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ बनती है, कभी सर्दी लगती है, कभी गर्मी लगती है, कभी भूख-प्यास की वेदना होती है, कभी पुत्र कुपुत्र दिखता है, कभी कोई शत्रु आकर मारने-पीटने को तैयार हो जाता है, कभी चेहरा बिगड़ता हुआ दिखायी देता है, कभी कपड़े फट जाते हैं, कभी ड्राइक्लीन वाला बिगाड़ देता है, कभी मकान के ईंट, चूने, पत्थर आदि बिगड़ते हुए दिखायी देते हैं, कभी छत से पानी टपकने लगता है, अमेरिका वालों के बेसमेन्ट में पानी भर जाता है...कहाँ तक कहें, ये सब वेदनीय कर्म के उदयजन्य तकलीफें हैं।

शिष्य कहता है कि पण्डितजी ये सब तो असाता के उदय से होने वाले दु:ख हैं। जब साता का उदय आयेगा, तब तो सुख मिलेगा या नहीं?

तब भी सुख नहीं है, तू भ्रम से ही इसमें सुख मानता है, परमार्थ से सुख वहाँ है ही नहीं। फिर टोडरमलजी ने इन सब बातों को सिद्ध करते हुए लिखा कि सबके सर्वकाल साता का उदय नहीं आता, साता का उदय सदाकाल नहीं रहता और एक जीव के कभी साता का उदय कभी असाता का उदय होता है, साता के उदय से मिली हुई वस्तु असाता के उदय में बुरी लगने लग जाती है। दो व्यक्तियों को एक जैसी वस्तु मिले, तो किसी को सुख और किसी को दु:ख दिखाई देता है; सो सबकुछ भ्रम ही है। वास्तव में भ्रमजनित दु:ख को मिटाने का उपाय तो भ्रम मिटाना ही है, यह बात पण्डितजी पीछे कह चुके हैं। बहुत विस्तार से चर्चा है, मैं तो दु:साहस कर रहा हूँ एक घंटे में आपको पूरा अध्याय पढाने का।

आयु कर्म के उदय से जिन्दगी रहती है। ये मरना चाहता नहीं है; परन्तु इसका जीवन-मरण आयु कर्म के आधीन है। ये मरने से डरता है, किसी को मरण का कारण जानता है तो दु:खी होता है। मर नहीं जाऊँ, कोरोना नहीं आ जाए, कोई बीमारी नहीं आ जाए, कोई पकड़ लेगा, दुर्घटना हो गयी तो मर जाऊँगा। लेकिन, अरे भाई! यह तो आयु कर्म के आधीन

है। यह जीव मृत्यु और उसके भय से बचने के लिये इलाज करवाता है, डॉक्टरों के पास भागता है, किले बनवाता है, कोट बनवाता है, अपने लिये औषधियाँ लाता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाने के लिये उपाय करता है; लेकिन ये सब तो झूठे उपाय हैं, क्योंकि जिन्दा रहना तो आयुकर्म के अनुसार है। जो भी उपाय कर रहा है, ये सभी उपाय झूठे हो रहे हैं। सच्चा उपाय तो यह है कि सम्यग्दर्शन हो और इस पर्याय में एकत्व बुद्धि टूटे, तब इसका आयु कर्मजन्य दु:ख मिटे।

इसी तरह से नाम कर्मजन्य दु:खों को बतलाया। नामकर्म के उदय से शरीर की नाना प्रकार की अवस्थाएं होती है। पहले गोरा था, अब काला हो गया, ये ऊपर से क्रीम-पाउडर घिस रहा है, सोचता है कि इससे सुखी हो जाऊँगा, कोशिश किये जा रहा है, बाल सफेद हो गये हैं, अब ये काले कैसे बने रहें, पर भाई! ये नाम कर्म के आधीन है, तू ऊपर से काले करने के उपाय कर रहा है, तेरे अन्दर से सफेद निकल रहे हैं, जितने उपाय कर रहा है, ये सब उपाय झूठे हैं, सच्चा उपाय तो सम्यग्दर्शन की प्राप्ति ही है।

गोत्र कर्म के कारण उच्च कुल एवं नीच कुल की प्राप्ति होती है। नीच कुल में चला गया, वहाँ कितने ही काल तक रहता है, फिर पर्याय छूटने पर कुल बदल जाता है। कोई उपाय इसके नियंत्रण में रहता नहीं है, इसलिये यह दु:खी होता रहता है।

कुल मिलाकर यहाँ आठों कर्मों के उदय में होने वाले दु:खों की चर्चा की, उन सभी दु:खों में पण्डितजी ने कर्म के उदयजन्य परिस्थितियों में दु:ख बतलाया और सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को अन्त में सुख का कारण सिद्ध किया।

इसप्रकार आधा अध्याय यहाँ पूर्ण हुआ। **(क्रमश:)**

'वैद्य शिरोमणि' से सम्मानित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक विद्वान एवं वरिष्ठ अध्यापक डॉ. दीपकजी जैन जयपुर को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के अवसर पर दिगम्बर जैन औषधालय ने '**वैद्य शिरोमणि**' उपाधि से सम्मानित किया। आपने अपने 25 वर्ष के सेवाकाल में 7 लाख से अधिक रोगियों को अहिंसक चिकित्सा पद्धति से लाभ पहुंचाया है।

इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

उपकार दिवस एवं शिविर संपन्न

दिल्ली : यहाँ घेवरा मोड़ स्थित आत्मसाधना केंद्र का 15वाँ वार्षिकोत्सव, समयसार गुरुवाणी मंथन शिविर एवं आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की बालिकाओं का दसवाँ दीक्षांत समारोह दिनांक 31 मार्च से 4 अप्रैल तक संपन्न हुआ।

दिनांक 31 मार्च को ऑनलाइन ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर द्वारा हुआ। समयसार कहान शताब्दी महोत्सव के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातःकाल 170 तीर्थंकर मंडल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर समयसार : गुरुवाणी मंथन शिविर में पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के प्रतिदिन विशेष व्याख्यानों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. जतीशचंदजी सनावद, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ द्वारा एक-एक विशिष्ट व्याख्यान का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन के निर्देशन में पण्डित अनिकेश शास्त्री भिण्ड, श्री सम्मेदजी जैन टीकमगढ द्वारा संपन्न हुये।

दिनांक 31 मार्च और 1 अप्रैल को रात्रि में पौराणिक कथा महाभारत का मंचन आत्मार्थी कन्याओं द्वारा किया गया, जिसमें महाभारत की उपकथाओं के आधार पर बालिकाओं द्वारा अद्भुत प्रस्तुति दी गई। दिनांक 2 और 3 अप्रैल को रात्रि में सत्र 2020-21 की बालिकाओं का दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर विदुषी राजकुमारी जैन सनावद एवं ब्र. वासंतीबेन देवलाली के उद्बोधन का विशेष लाभ प्राप्त हुआ।

अंतिम दिन दोपहर को समयसार संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. सुधीरजी जैन दिल्ली ने की। गोष्ठी में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद द्वारा समयसार के विशिष्ट विषयों पर चर्चा प्रस्तुत की गई।

रात्रि में आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन के अध्यापकों द्वारा विशेष संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर ने की। वक्ताओं के क्रम में ब्र. वासंतीबेन देवलाली, रानी दीदी खनियाधाना, रजनी दीदी नागपुर, विदुषी श्रुति शास्त्री जयपुर का लाभ प्राप्त हुआ। दोनों गोष्ठियों का संचालन श्री विरागजी शास्त्री द्वारा किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम प्रत्यक्ष रूप से एवं ऑनलाइन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर दिल्ली के अनेक साधर्मियों ने पधारकर लाभ प्राप्त किया। कार्यक्रमों की सफलता में प्राचार्या वत्सलाजी एवं अधीक्षिका श्रीमती रेखाजी का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का आभार ट्रस्टी श्री नरेशजी लुहाड़िया एवं श्री सुमतिजी सेठिया ने व्यक्त किया। संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री एवं श्री विरागजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें – इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 942 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 148 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./ नेट/ जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य **संस्कृत विश्वविद्यालय** की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में **B.A.** के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो **(M.A.)** के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र जुलाई 2021 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित (35) है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना–पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल उपलब्ध न हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

(यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें साक्षात्कार प्रक्रिया में रहना अनिवार्य होगा।) **– डॉ. शान्तिकुमार पाटील** (प्राचार्य)

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 44 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ–साथ अपने परिवार–समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
5. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
6. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
7. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
8. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
9. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र सभी क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व–पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो? यदि हाँ..... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को अवश्य प्रेरित करें। **प्रवेश हेतु साक्षात्कार प्रक्रिया की सूचना यथासमय दी जायेगी।**

– पण्डित जिनकुमार शास्त्री (उपप्राचार्य)
8903201647, 8072446379

-: फॉर्म मंगाने का पता :-

पण्डित जिनकुमार शास्त्री (उपप्राचार्य) (8903201647) (8072446379) श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए–4, बापूनगर, जयपुर–302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458; **Email - ptstjaipur67@gmail.com**

विशेष सेमिनार संपन्न

सिद्धायतन–द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 25 फरवरी को समयसार संगोष्ठी के अन्तर्गत सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार के आधार से विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा तत्त्व की गूढ गम्भीर चर्चा बहुत सरल सहज भाषा में संपन्न हुई। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, मुख्य अतिथि सेठ अशोकजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट भोपाल, विशिष्ट अतिथि श्री राहुलजी गंगवाल व श्री विनीतजी गंगवाल जयपुर एवं विशेषज्ञ विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर थे।

इस अवसर पर 'समयसार को पढने का फल' विषय पर डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, 'क्रमबद्धपर्याय का स्वरूप' विषय पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, 'आत्मा के सर्वथा अकर्तृत्व का खण्डन' विषय पर पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर एवं 'करे अन्य भोगे अन्य की मान्यता का खण्डन' विषय पर विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री अलवर एवं संचालन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर ने किया।

वेदी शिलान्यास संपन्न

कानोड–उदयपुर (राज.) : यहाँ वीसा नरसिंहपुरा जैन समाज के तत्त्वावधान में नया बाजार स्थित श्री वीतराग दिगम्बर जैन मन्दिर में दिनांक 28 फरवरी को निर्माणाधीन नवीन वेदी का शिलान्यास संपन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री भगवतीलालजी, श्री प्रफुल्लकुमारजी जैन एडवोकेट, श्री दिलीपकुमारजी पटवारी, श्री लक्ष्मीलालजी जैन के अतिरिक्त अनेक साधर्मियों ने स्वर्ण, रजत एवं ताम्र पत्र शिलाएं नींव में मंत्रोच्चारपूर्वक स्थापित करके वेदी शिलान्यास किया।

विधि–विधान के समस्त कार्य डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा संपन्न हुये, जिन्होंने वेदी शिलान्यास की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। सभा के अध्यक्ष श्री मुकेशजी जैन एवं मुख्य अतिथि श्रीमती पप्पल दीदी टिमरवा ने भी सभा को सम्बोधित किया। अन्त में आभार प्रदर्शन समाज के अध्यक्ष श्री भगवतीलालजी एडवोकेट ने किया।

जर्नलिस्ट अखिल बंसल को डॉक्टरेट

जयपुर (राज.) : जैन पत्रकारिता के पुरोधा समन्वय वाणी (पाक्षिक) के संपादक, अनेक पुस्तकों के लेखक जर्नलिस्ट अखिल बंसल ने जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनूं से पी–एच.डी.(विद्या वारिधि) की उपाधि प्राप्त की। आपने डॉ. शक्तिदान चारण के निर्देशन व डॉ. संयमप्रकाश जैन के सह–निर्देशन में 'आचार्य विद्यानंद एवं आचार्य महाप्रज्ञ के आध्यात्मिक चिंतन का विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकार्य किया है। शोधकार्य में डॉ. बी.एल. सेठी, जयपुर का विशेष सहयोग रहा।

स्मरण रहे कि अखिल बंसल अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ, अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद् तथा राष्ट्रीय दिगम्बर जैन प्रतिनिधि महासंघ के महामंत्री तथा अथाई–आशा इन्टरनेशनल के संस्थापक निदेशक हैं। आपके द्वारा संपादित पूजन की पुस्तक जिनेन्द्र अर्चना ढाई लाख से अधिक की संख्या में प्रकाशित होकर जन–जन तक पहुँच चुकी है। आपको अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। **– अंशुल जैन, जयपुर**

शोक समाचार

(1) बडोदतांगडा–जालना (महा.) निवासी श्रीमती अनिता अनंतराव अंबेकर का दिनांक 15 सितम्बर को 52 वर्ष की आयु में समाधिमरणपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल परिणामी, स्वाध्यायी, तत्त्वश्रद्धानी थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक कुलभूषण अंबेकर की माताजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1001/– रुपये प्राप्त हुये।

(2) दलपतपुर–सागर (म.प्र.) निवासी श्रीमती मोहिनीजी मोदी धर्मपत्नी श्री प्रमोदकुमारजी मोदी (**LIC**) का दिनांक 9 मार्च को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप अत्यंत विदुषी स्वाध्यायप्रेमी महिला थीं, आपके पूरे परिवार में तत्त्वज्ञान के संस्कार कूट–कूटकर भरे हैं। आपकी स्मृति में 1100/– रुपये संस्था को प्राप्त हुये।

(3) कोटा (राज.) निवासी श्री माणकचंदजी कासलीवाल (पूर्वमंत्री–मुमुक्षु मण्डल कोटा) का दिनांक 15 मार्च को शांतपरिणामों से हो गया। आप बहुत सहज सरल और माधुर्य स्वभावी थे, आपने कोषाध्यक्ष से लेकर मंत्री तक का पदभार पूरे उत्तरदायित्व से संभाला। आपकी स्मृति में 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

(4) भोपाल (म.प्र.) निवासी श्री संतोषकुमारजी जैन (जबलपुर वाले) का दिनांक 26 मार्च को 74 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त थे। साथ ही टोडरमल स्मारक का भी लाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1100/– रुपये प्राप्त हुये।

(5) अजमेर (राज.) निवासी श्री त्रिलोकचंदजी सोनी का दिनांक 27 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। अजमेर में तत्त्वज्ञान की गतिविधियों के संचालन में आपका महत्वपूर्ण सहयोग रहता था।

(6) पीसांगन–अजमेर (राज.) निवासी श्री नेमीचंदजी पहाड़िया का दिनांक 28 मार्च को शांतपरिणामों से देहावसान हो गया। आप सच्चे आत्मार्थी थे; कुन्दकुन्द नगर सोनागिर के विकास में आपका महत्वपूर्ण योगदान है। टोडरमल स्मारक से आपको गहरा लगाव है; आपने अपने पोते अजय पहाड़िया को टोडरमल महाविद्यालय में शास्त्री करने हेतु भेजा था।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ फाल्गुन अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर पूज्य श्रीकानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा दिनांक 21 से 28 मार्च तक पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा रचित 137 कलशों सहित एवं महत्वपूर्ण टीकाओं से सुशोभित श्री समयसार महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का ऑनलाइन आयोजन हुआ।

इस अवसर पर प्रात:काल श्री समयसार मण्डल विधान, गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन हुए। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रकाशभाई कोलकाता, पण्डित निखिलजी शास्त्री भायंदर आदि के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित समकितजी शास्त्री देवलाली, पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली, पण्डित निखिलजी शास्त्री एवं ब्र.वासन्ती बेन देवलाली द्वारा सम्पन्न हुए।

(2) अलवर (राज.) : यहाँ कहान समयसार संप्राप्ति शताब्दी वर्ष के अवसर पर अष्टाह्निका पर्व में दिनांक 21 से 29 मार्च तक डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित समयसार महामंडल विधान का आयोजन हुआ।

प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं सायंकाल नाटक समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल आध्यात्मिक पाठ एवं बालकक्षा का संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर के निर्देशन में पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना, सम्यक् (दिव्यांश) जैन के सहयोग से संपन्न हुए।

इस प्रसंग पर ऑनलाइन माध्यम से डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री अजितप्रसादजी बड़ौदा एवं पण्डित राजकुमारजी उदयपुर के उद्बोधन के अतिरिक्त दिवंगत विद्वानों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के वीडियो प्रवचन का प्रसारण किया गया।

समस्त कार्यक्रम पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट एवं श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट अलवर के संयोजन में श्री रत्नत्रय दिगम्बर जैन मंदिर चेतन एन्क्लेव द्वारा संपन्न हुए। ऑनलाइन प्रसारण में पण्डित विनीतजी शास्त्री हटा, पण्डित वीतरागजी शास्त्री एवं पण्डित तन्मयजी शास्त्री का सहयोग रहा। **- अनंतकुमार जैन, अध्यक्ष**

(3) सिद्धक्षेत्र सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ स्थित कुन्दकुन्द नगर में फाल्गुन माह के अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 24 मार्च से डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा तीनों समय व्याख्यान हुए, जिसमें आत्मानुभूति एवं तत्त्वविचार के सिद्धांतों की चर्चा की गई। साथ ही आपकी सुपुत्री विदुषी श्रुति शास्त्री द्वारा दोपहर को विशेष कक्षाएं ली गई। प्रातःकाल पण्डित जीवेशजी शास्त्री एवं श्री पाटनीजी द्वारा पंचमेरू नंदीश्वर विधान संपन्न कराया गया। इस अवसर पर कुन्दकुन्द नगर के निर्देशक डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' ने सभी का आभार प्रकट किया।

(4) कोटा (राज.) : यहाँ मुमुक्षु आश्रम में समयसार : कहान शताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 21 से 28 मार्च तक श्री समयसार महामंडल विधान एवं समयसार चिंतन शिविर का आयोजन किया गया। **(समयसार चिंतन शिविर के समाचार हेतु आगामी अंक देखें।)**

वार्षिकोत्सव में संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित नवम् वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत दिनांक 26 फरवरी को दोपहर में टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा **आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी एवं उनका मोक्षमार्गप्रकाशक** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने की।

कार्यक्रम का मंगलाचरण शिवराज स्वामी मानगांव, संचालन संभव जैन दिल्ली एवं आभार प्रदर्शन रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा ने किया।

● दिनांक 27 फरवरी को दोपहर में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों द्वारा **जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में पण्डित टोडरमलजी का योगदान** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के विशेषज्ञ विद्वान डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर थे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने क्या मोक्षमार्गप्रकाशक को पूरा नहीं किया जा सकता है विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का मंगलाचरण एवं संचालन पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा ने किया।

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण

फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम : जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि : पाक्षिक
मुद्रक : श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम : ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
सम्पादक का नाम : डॉ. संजीवकुमार गोधा (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 17-4-2021

प्रकाशक : **ब्र. यशपाल जैन**
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

17 अप्रैल 2021, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत –

श्री समयसार मण्डल विधान एवं कीर्ति स्तम्भ शिलान्यास महोत्सव संपन्न

सिद्धायतन–द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 20 से 25 फरवरी तक श्री समयसार मंडल विधान एवं कीर्ति स्तम्भ शिलान्यास महोत्सव संपन्न हुआ।

महोत्सव का ध्वजारोहण श्रीमती निशा ध.प. श्री प्रमोदजी मस्तांई परिवार द्वारा हुआ। महोत्सव में प्रतिदिन प्रात: समयसार मंडल विधान आयोजित हुआ। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजयजी सिद्धार्थी एवं पण्डित समकितजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समयसार पर सी.डी. प्रवचन के साथ-साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा समयसार का सार विषय पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। दोपहर में कु. लब्धि जैन द्वारा समयसार कलशों का पाठ एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा समयसार के एक-एक अधिकार पर संगोष्ठी संपन्न हुई। सायंकाल पण्डित सचिनजी सागर एवं पण्डित अखिलेशजी घुवारा के निर्देशन में अनेक विद्वानों द्वारा बाल कक्षाएं संचालित हुईं। तत्पश्चात् जिनेन्द्र भक्ति एवं पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर द्वारा समयसार पर व्याख्यान हुये। रात्रि में प्रवचनोपरांत डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन में देश के विशिष्ट विद्वानों द्वारा समयसार ग्रंथ पर विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया।

घर-घर समयसार हर घर समयसार – कहान सम्प्राप्ति वर्ष के उपलक्ष्य में 150 घरों में ग्रन्थाधिराज समयसार और मंगल कलश विराजमान हुआ। 'घर-घर समयसार हर घर समयसार' के अन्तर्गत श्रीमती कुसुम ध.प. महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर द्वारा मुख्य कलश एवं श्रीमती राजकुमारी ध.प. सेवकचंदजी बड़ामलहरा द्वारा समयसार विराजमान किया गया। स्वानुभव स्वाध्याय मंडल औरंगाबाद के सभी सदस्यों द्वारा अपने घरों में समयसार विराजमान किया गया। साथ ही ऑनलाइन भी सैंकड़ों घरों में ग्रन्थाधिराज समयसार विराजमान हुये।

कीर्तिस्तम्भ का शिलान्यास – तीर्थधाम सिद्धायतन के द्विदशाब्दी वर्ष के अवसर पर बनने वाले कीर्ति स्तम्भ में ग्रन्थाधिराज समयसार की 100 गाथाएं अंकित की जायेगी और बुन्देलखण्ड में जैनसमाज के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले विशिष्ट लोगों के नाम अंकित किये जाएंगे। पण्डित अभयकुमारजी देवलाली एवं पण्डित राजकुमारजी उदयपुर की प्रेरणा से स्तंभ का शिलान्यास संस्था के संस्थापक अध्यक्ष श्री चन्द्रभानजी जैन घुवारा परिवार तथा श्री इन्द्रजीत महेन्द्रजी गंगवाल परिवार इन्दौर की ओर से पण्डित अभयजी देवलाली एवं पण्डित अशोकजी जबलपुर द्वारा संपन्न हुआ।

सिद्धायतन सिद्धार्थी परिषद् का शपथ ग्रहण – बुन्देलखण्ड के सोनगढ तीर्थधाम सिद्धायतन में विगत 20 वर्षों से संचालित श्री समन्तभद्र शिक्षण संस्थान के सभी भूतपूर्व एवं वर्तमान छात्रों की सहमति से सिद्धायतन सिद्धार्थी परिषद् का गठन संपन्न हुआ। परिषद् के माध्यम से विभिन्न तात्त्विक व सामाजिक गतिविधियों का संचालन हो, इसलिये अध्यक्ष पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, महामंत्री पण्डित संजयजी सिद्धार्थी इन्दौर, मंत्री पण्डित नीलेशजी शास्त्री घुवारा, संयोजक पण्डित निलयजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित प्रशांतजी शास्त्री सिद्धायतन, प्रचारमंत्री पण्डित अमितजी शास्त्री अरिहंत व पण्डित दीपकजी शास्त्री ध्रुव एवं सांस्कृतिक मंत्री पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर व पण्डित अखिलेशजी शास्त्री घुवारा को चुना गया। ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष एवं मंत्री श्री विनोदजी देवड़िया एवं प्रद्युम्नजी फौजदार के द्वारा सभी पदाधिकारियों को शपथ दिलायी गई।

समस्त कार्यक्रम पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली व पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर की देखरेख में संपन्न हुआ।

हार्दिक बधाई!

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक **पण्डित विवेकजी शास्त्री (दलपतपुर वाले) इन्दौर** का शाश्वतधाम के अध्यक्ष श्री ललितजी कीकावत लूणदा की सुपुत्री **सौ.कां. पूजा शास्त्री** के साथ शुभ विवाह दिनांक 14 मार्च 2021 को संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री विनोदजी मोदी परिवार की ओर से 1100/- रुपये संस्था हेतु प्राप्त हुये।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur67@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2021

प्रति,